ग्रामीण महिला विकास संस्थान

GMVS

वार्षिक प्रतिवेदन 2014-15

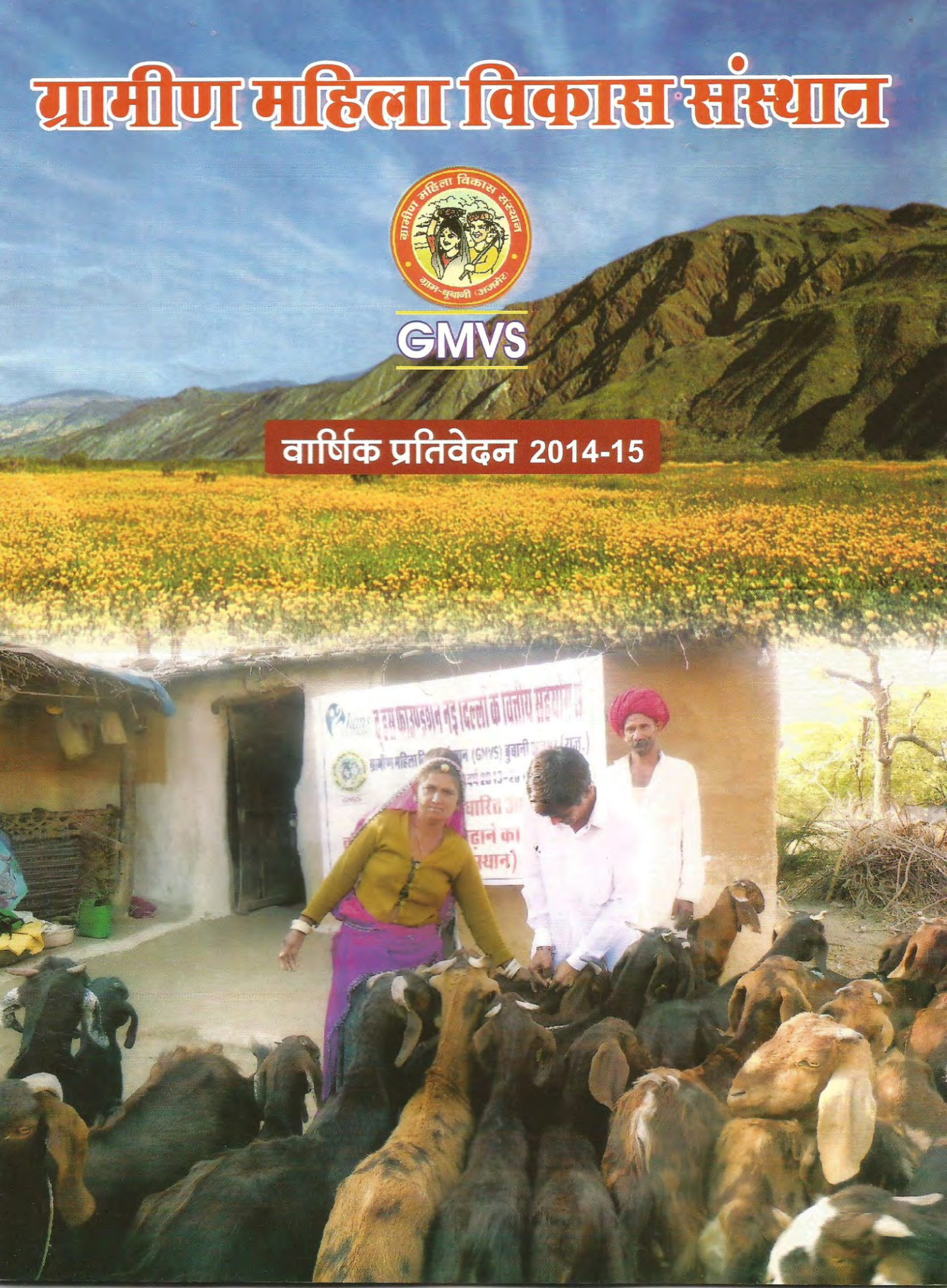

प्रगति की ओर बढ़ते कदम

अध्यक्षीय सम्बोधन

मुझे खुशी है कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी ग्रामीण महिला विकास संस्थान (जी.एम.वी.एस.) वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर रही हैं। 2014-15 मे संस्थान को सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करते हुए 18 साल हो गये हैं। गावों का शहरों की ओर लगातार पलायन हो रहा था जिसका कारण गावों मे रोज़गार के संसाधनों का अभाव था। ग्रामीणों के पास रोज़गार की उपलब्धता न होने के कारण वे शहरों मे रोजगार ढूंढने जाते थे और गरीबी के चक्रव्यूह मे फंस जाते थे। गांव की इसी बेरोजगारी व गरीबी को दूर करने, गांव मे ही ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध करवाने व महिला विकास के उद्देश्य से 1998 मे ग्रामीण महिला विकास संस्थान एक स्वैच्छिक संस्थान के रूप मे नींव रखी गई। विभिन्न कार्यक्रमों व परियोजनाओं के माध्यम से गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा महिला सशक्तिकरण आदि के विभिन्न मुद्दों पर राजस्थान के अजमेर जिले के 5 पंचायत समितियों (श्रीनगर, सिलोरा, पीसांगन, केकड़ी व भिनाय) तथा चित्तौड़गढ़ के 5 पंचायत समितियों (चित्तौड़गढ़, निम्बाहेड़ा, कपासन, चन्देरिया व सावा) मे संस्थान कार्य कर रही हैं।

संस्थान हर कार्यक्रम व गतिविधि को शत-प्रतिशत सफल करती है तथा उचित परिणाम प्रस्तुत करती हैं। संस्थान हर वर्ष पुरस्कार से सम्मानित भी होती हैं। संस्थान की कर्मठ कार्यरत कार्यकर्त्ताओं को उनके सफल मेहनत, लगन व प्रयासों हेतु आभार व्यक्त करता हूँ तथा संस्थान सहभागी विभिन्न वित्तीय सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं को उनके बहुमूल्य सहयोग हेतु आभार प्रकट करता हूँ।

(अनिल कुमार माथुर)
अध्यक्ष

सचिव की कलम से ....

1998 मे ग्रामीण महिला विकास संस्थान को स्थापित करना एक स्वप्न था। गांवों में गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अशिक्षा आदि विभिन्न चुनौतीपूर्ण मुद्दों के साथ संस्थान पिछले 18 वर्षों से कार्य कर रही हैं। विभिन्न संस्थाओं के साथ सहभागिता से संस्थान के द्वारा लोगो की स्थानीय रीति-रिवाजों, विश्वास तथा आवश्यकताओं को ध्यान मे रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया गया, परिणामस्वरूप लाखों महिलाओं, बच्चों तथा कमजोर व वंचित वर्ग के लोगों को राहत प्राप्त हुई। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान विभिन्न कार्यक्रमों का वार्षिक प्रतिवेदन आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही है।

संस्थान का दीर्घकालीन उद्देश्य महिला सशक्तिकरण है जिसे प्राप्त करने हेतु समय समय पर विभिन्न अल्पकालीन उद्देश्य बनाकर महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों को बैंक लिंकेज कार्यक्रम के तहत विकास व रोजगार हेतु ऋण उपलब्ध कारवाये जाते हैं।

संस्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा हैं जैसे- द् हंस फाउण्डेशन मोबाइल हेल्थ केयर यूनिट के तहत महिलाओं तथा बच्चों को नि:शुल्क जाँच व दवाइयों के साथ जागरूकता कार्यक्रमों मे स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर जानकारी प्रदान की जा रही हैं। महिला साक्षरता कार्यक्रम के द्वारा महिलाओं को रात्रि पाठशाला मे शिक्षा प्रदान की जाती हैं।

संस्था को देश की सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओ का आर्थिक, व्यक्तिगत सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

गाँवों के समुचित विकास में कार्यकर्ताओ की मेहनत, लगन, निष्ठा एवं समर्पण ही अनुकूल परिणाम दे सकता है। कार्यकर्ता संस्था के लक्ष्यो एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयासरत है। अत: संस्थान की सफलता में सहयोगी सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओ हेतु आभार प्रकट करता हूँ तथा आगे मार्गदर्शन की अपेक्षा करता हूँ।

संस्था द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों का विवरण 2014-2015 के वार्षिक प्रतिवेदन में दिया जा रहा है। मै इस गतिशील संस्था के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(शंकर सिंह रावत)
सचिव

ग्रामीण महिला विकास संस्थान - बूबानी, अजमेर (राज.)

Gramin Mahila Vikas Sansthan (GMVS)-Bubani, Ajmer (Raj.)

वार्षिक प्रतिवेदन : वर्ष 2014-2015

पृष्ठभूमि (Background)

ग्रामीण महिला विकास संस्थान मानव समाज विषयक उद्देश्य विशेष के लिए गठित स्वैच्छिक संगठन है, जो वृहद स्तर पर ग्रामीण समुदाय के साथ उनके सामाजिक सशक्तिकरण एवं आजीविका संवर्द्धन के लिए कार्य कर रही है। संस्था विविध और व्यापक स्तर पर जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चों की देखभाल, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक मुद्दे आादि पर 1997 से कार्यक्रम संचालित कर रहा है। वर्तमान मे संस्था अजमेर जिले की श्रीनगर, सिलोरा, भिनाय, पीसांगन और केकड़ी पंचायत समिति तथा चित्तौड़गढ़ जिले की पंचायत समिति चित्तौड़गढ़, निम्बाहेड़ा, कपासन, चन्देरिया, सवा आदि में कार्य कर रही है।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान, राजस्थान संस्था पंजीकरण सोसायटी अधिनियम 1958 की धारा 28 के तहत एवं आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12-ए व 80-जी के तहत तथा एफ. सी. आर. ए. एक्ट 1976 के अधीन पंजीकृत है।

विज़न (Vision)

ऐसे सशक्त समाज की स्थापना जो शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो।

मिशन (Mission)

मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग से पिछड़े, अभावग्रस्त, ग़रीब समाज को व स्वयं सहायता समूह, कलस्टर व फैडरेशन के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से सशक्त करना, ग्रामीण लोगों, वंचित वर्ग, खासकर महिलाओं/बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पेयजल व आजीविका के साधन सुनिश्चित करवाना।

संस्था के उद्देश्य (Objectives)

- समस्याग्रस्त गांवों में स्वच्छ पीने के पानी व्यवस्था करने में ग्रामीण क्षेत्रों में सहयोग करना।
- ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना एवं विशेष तौर से महिला स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना।
- महिला विकास व सशक्तिकरण में ग्रामीण महिलाओं की रूचि पैदा करना तथा महिलाओं को स्वरोजगार प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाना।
- किसानों को आधुनिक तकनीकी की जानकारी देना एवं कृषि के लिए प्रेरित।
- ग्रामीण लोगों का बीमा से जुड़ाव करके जोखिम करना।
- ग्रामीण महिलाओं को साक्षरता केन्द्रों के माध्यम से साक्षर करना।

- बालश्रम रोकथाम के लिए लोगों को जागरुक करना।
- ग्रामीणों को पशुपालन जैसे – उन्नत नस्ल की बकरी पालन करने के लिए प्रेरित करना।
- पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ पौधों के महत्त्व के प्रति लोगों को जागरुक करना।
- महिला व बाल विकास कार्यक्रम का संचालन व लोगों की जागरुकता हेतु बैठकों का आयोजन करना।
- बेहतर शिक्षा हेतु विद्यालयों एवं पुस्तकालयों की स्थापना करना।
- ग्रामीण दस्तकारी को बढ़ावा देने में सहयोग करना ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार अवसर पैदा करने हेतु खादी ग्रामोद्योग की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नियमानुसार ऋण प्राप्त करवाना।
- संस्था के उद्देश्य एवं कार्यकलापों को प्रचारित करना किताबों का मुद्रण एवं प्रकाशन तथा पुस्तकालयों की स्थापना करना।

द् हंस फाउण्डेशन 'मोबाइल हेल्थ केयर यूनिट'
The Hans Foundation "Mobile Health Care Unit"

पृष्ठभूमि

ग्रामीण महिला विकास संस्थान- बूबानी, अजमेर द्वारा राजस्थान के अजमेर जिले की श्रीनगर पंचायत समिति के 12 गाँवों में **द् हंस फाउण्डेशन 'मोबाइल हेल्थ केयर यूनिट'** कार्यक्रम का संचालन **द् हंस फाउण्डेशन – नई दिल्ली** के वित्तीय सहयोग किया जा रहा हैं। इस कार्यक्रम के तहत 12 गाँवों के सभी गाँववासियों को नि:शुल्क स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें माह मई 2014 से प्रदान की जा रही हैं। यह कार्यक्रम पिछले एक वर्ष से श्रीनगर के इन गाँवों में संचालित हैं। इस कार्यक्रम का मुख्य जुडाव बालिकाओं व महिलाओं से हैं। कार्यक्रम मे सेवाओं के अतिरिक्त स्वास्थ्य कार्यक्रताओं को समय समय पर प्रशिक्षण, स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन, जागरुकता शिविर आदि का भी आयोजन किया गया। इस परियोजना के लगभग 27516 लाभार्थी हैं। कार्यक्रम के तहत एम्बुलेंस प्रत्येक माह एक गाँव में 2 बार जाती है तथा गाँव में सेवायें प्रदान करती हैं। जागरुकता कार्यक्रम का भी आयोजन किया जाता हैं।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गाँववासियों की शारीरिक स्थिति में सुधार करना जिसमें महिला, पुरुष, वयस्क, बालक तथा वृद्व इत्यादि।
- दूर दराज गाँवों में चिकित्सा सुविधायें प्रदान करना।
- सुविधायें आसानी से तथा समय पर प्रदान करना तथा समय तथा पैसे की बचत करना।
- आर्थिक स्थिति में सुधार करने मे मदद करना।
- स्वास्थ्य जाँच के अतिरिक्त लाभार्थियों की काउसलिंग भी की जाती हैं जिसमें उन्हें स्वच्छतता, स्वच्छ वातावरण, पोषणयुक्त आहार, आखों की देखभाल, मानसिक स्वास्थ्य काउसलिंग, सबस्टेंस एबयूज काउसलिंग इत्यादि।

- महिलाओं में उनके स्वास्थ्य की महत्ता का अनुभव कराने के साथ साथ परिवार मे एक महत्वपूर्ण अंग के रुप में शामिल कराना।
- सुरक्षित मातृत्व एवं बाल उतरजीवितता से संबंधित स्वास्थ्य एवं पोषाहार के बारे में समुदाय एवं माताओं में जागरुकता पैदा करना।
- गाँव में स्वास्थ्य सुविधाओं को ओर अधिक पहुँच योग्य बनाना।
- प्रसव पूर्व, सुरक्षित प्रसव तथा प्रसव बाद देखभाल को प्रेरित करना।

रणनीति

- गाँवों व घरों का सर्वेक्षण।
- महिला स्वयं सहायता समूह तथा एक जगह महिलाओं को एकत्रित करके पोषण एवं स्वास्थ्य पहचान की जानकारी देना तथा स्वच्छता की महत्ता बताना।
- कार्यक्रम के माध्यम से गाँववासियों तथा गाँव में बनाई गई स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों की बैठक मे बच्चों को खिलाने के सरल तरीकों, टीकाकरण, विटामिन ए, बीमारी कर इलाज तथा स्वास्थ्य समस्याओं के बारे जानकारी देना। तथा स्वास्थ्य मुद्दों पर चर्चा करना।
- प्रोफेशनल के द्वारा बीमार को काउसलिंग प्रदान कराना।
- गंभीर बच्चों को अस्तपाल व विशेषज्ञ के पास रेफर करना।
- स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा गाँव में प्रतिदिन होम विजिट करना तथा बीमारों का फॉलोअप करना तथा समय समय पर फीडबैक प्राप्त करना।
- परियोजना समन्वयक द्वारा स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं की मॉनिटरिंग व मूल्याकंन करना।
- बच्चों व माताओं को स्वास्थ्य कार्ड प्रदान करना तथा माताओं को बच्चों के वजन हेतु काउसलिंग करना।

उपलब्धियाँ

- परियोजना द्वारा मार्च, 2015 तक 17380 मरीजों का इलाज किया जा चुका हैं।
- परियोजना 12 गाँवों मे स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान कर रही हैं।
- ग्रामवासियों को नि:शुल्क सेवायें प्रदान करना।
- गाँववासियों के स्वास्थ्य स्तर मे सुधार विशेष तौर पर महिलाओं के स्वास्थ्य बेहतर हुआ हैं।
- गाँववाासियों को समय समय पर विभिन्न बिमारियों की जनकारी प्रदान की जाती हैं।
- गर्भस्थ महिलाओं, धात्री माताओं तथा किशोर बालिकाओं को जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों पर विभिन्न जानकारी प्रदान की जाती हैं।
- गरीब ग्राववासी को शीघ्रता तथा समय पर दवाईयाँ प्राप्त हो रही हैं।
- उपचार हेतु आवागमन मे लगने वाले समय का बचाव।
- गाँववासी जो कमजोर आर्थिक स्थिति, लापरवाही, समय की कमी, स्वास्थ्य के प्रति अनभिज्ञता के कारण

उपचार व दवाईयाँ लेने मे असमर्थ थे, वे भी अब उपचार प्राप्त कर रहे है तथा पूरा इलाज भी करवाते हैं।

- मरीजों द्वारा मोबाइल हेल्थ केयर टीम का बेसब्री से इन्तजार किया जाता हैं।
- गाँव वासियों द्वारा एम.आर. या अन्य अस्पताल की अपेक्षा मोबाइल हेल्थ केयर टीम के उपचार को ज्यादा महत्ता दी जाती हैं।

बकरी पालन आधारित आजिविका की गतिविधियों को बढ़ाने का कार्यक्रम

Enchance Goat Based Livilihood Activity in Ajmer

पृष्ठभूमि

द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी द्वारा अजमेर जिले की पंचायत समिति भिनाय के ग्राम पंचायत बूबकिया, लामगरा व सोबड़ी के 6 गावों में परियोजना का संचालन ग़रीब, अनपढ़, मुख्य धारा से दूर रहने वाले लोगों के साथ किया जा रहा है। ये लोग बकरी पालन तो करना चाहते हैं, मगर उनके पास संसाधन नहीं होने के कारण अच्छी नस्ल की बकरियाँ नहीं पाते हैं, जिससे उनकी आय नहीं हो पाती है व निरन्तर ग़रीबी बनी रहती है। केवल आय में वृद्धि कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने हेतु ग्रामों के 100 परिवारों को बकरी पालन आधारित आजीविका की गतिविधियों को बढ़ाने का कार्यक्रम में परियोजना के लाभार्थी चयन कर परियोजना का संचालन किया गया।

परियोजना के उद्देश्य

- ग़रीब लोगों को बकरी पालन करवाकर उनकी आजीविका सुदृढ़ करना।
- बकरी मृत्यु दर मे कमी करना।
- बकरी पालन में जोखिम को कम करना।
- बकरी पालकों आय मे वृद्धि करवाना।
- बकरी की अच्छी नस्ल उपलब्ध करवाना।
- बकरी पालन में लागत को कम करके आय का लाभ को बढाना।

रणनीति

- परियोजना लाभार्थियों को सिरोही नस्ल का बीजू बकरा उपलब्ध करवाना।
- परियोजना लाभार्थियों को बकरी उपलब्ध करवाना।
- नियमित डीवर्मिंग टीकाकरण करवाना।
- बकरी पालक समूह गठन करना।
- बकरी पालकों के साथ मासिक बैठक करना।
- बकरी पालन प्रबन्धन व्यवस्था मे सुधार करना।
- बकरी का बीमा करना।

- प्रबन्धन व्यवस्था मे नवीनीकरण करवाना।
- सन्तुलित आहार देना।
- हरा चारा उपलब्ध करवाना।

गतिविधियां

बकरी पालक बैठक- बकरी पालन हेतु लोगों को परियोजना के बारे में जानकारी बैठकें आयोजित की गईं, जिसमें बकरी पालन हेतु परियोजना के उद्देश्यों के बारे में विस्तार से बताया गया। परियोजना आगामी रणनीति से अवगत करवाया गया।

बकरी पालक लाभार्थियों का चयन बकरी पालने वाले उन ग़रीब लोगों का चयन किया गया जिनके पास आय का कोई साधन नहीं था तथा मज़दूरी हेतु बाहर नहीं जा सकते हैं तथा अन्य लोगों द्वारा उनके चयन हेतु सहमति जताई।

बकरी वितरण

ग्राम पंचायत	ग्राम	लाभार्थी
सोबड़ी	तेलाड़ा	21
	घणा	18
लामगरा	भेरूखेड़ा	10
	कालबेलिया की ढाणी	10
बूबकिया	रैण	18
	बूबकिया	23
	योग	**100**

बकरी वितरण

परियोजना के गाँवों में चयनित 100 परिवारों को सिरोही नस्ल की प्रति परिवार पाँच-पाँच बकरियाँ परियोजना से नि:शुल्क उपलब्ध करवाई गईं, जिससे बकरी पालकों को अपनी आजिविका चलाने हेतु एक मज़बूत पहलू मिला।

बीजू बकरा

बकरियो की नस्ल परिवर्तन नही हो इसके लिए सिरोही नस्ल के 100 बीजू बकरे परियोजना क्षैत्र मे निशुल्क उपलबध करवाये करवाये गये । जिससे बकरीयो की नस्ल मे बदलाव से होने वाले नुकसान से बचाया जा सका तथा बकरी पालको की आय नियमित बढती रहे ।

डीवर्मींग केम्प आयोजन

बकरीयो मे पाये जाने वाले अ:त परजीवी से छुटकारा पाने हेतू डीवर्मींग केम्प आयोजित किये गये जिसमे परियोजना बकरी मे डीवर्मींग किया गया। टीकाकरण केम्प आयोजन मे बकरी मे आने वाली अचानक बीमारियो के बचाव व मृत्यू दर को कम करने के लिये समयनुसार ई टी पी पी आर एफ एम डी टीकाकरण केम्प का आयोजन कर टीकाकरण किया गया ।

बकरी पालको का क्षमतावर्धन प्रशिक्षण

बकरी पालको का समय -समय पर क्षमतावर्धन प्रशिक्षण करवाया गया जिससे बकरी पालन मे आने वाली समस्याओ का समाधान किया जा सके तथा अचानक होने वाले नुकसान को बचाया जा सके।

सन्तुलित आहर खिलाना

बकरीयो के शारिरिक विकास व उत्पादन वृद्वि के लिये बकरीयो को सन्तुलित आहार खिलाया गया जिससे बकरीयो के शारिरिक भार वृद्धि व दुध उत्पादन वृद्धि, मेमना शरीर भार वृद्वि अच्छी हुई ।

हरा चारा खिलाना

बकरीयो को नियमित हरे चारे कि आवश्यकता पूर्ति हेतु परियोजना से रिजका चारा बकरीयो को खिलाया गया। विपरीत समय मे हरा चारा उपलब्ध करवाया गया जिससे बकरीयो से दुग्ध उत्पादन नियमित मिलता रहा। शारिरिक विकास उत्पादन क्षमता मे नियमितता बनी रही।

बकरी आवास शेड निर्माण

बकरी पालको की बकरी आवास के प्रति बेहतर समझ बनाने व बकरीयो को सर्दी, गर्मी, वर्षा से बचाने के लिऐ बकरी घर बनवाये गये । जिससे बकरीयो मे होने वाली अचानक बिमारियो से बचाया गया । वातवरण अनुसार सुविधा बकरी को मिलती रहे ।

उपलब्धियाँ

- बकरी पालकों को अपना रोज़गार उपलब्ध हुआ।
- बकरी पालकों की आजीविका में सुधार हुआ।
- गर्भवती महिलाओं व बच्चों को दूध उपलब्ध हुआ।
- बकरी पालकों की आय मे वृद्धि हुई।
- बकरी पालक बकरी में डीवर्मिंग टीकाकरण समय चक्र के प्रति समझ बनी।
- बकरियों की मृत्यु दर में कमी हुई।
- परियोजना के बारे में लोगों की समझ विकसित हुई।
- आवास प्रबन्धन व्यवस्था के प्रति बकरी पालकों की समझ विकसित हुई।
- क्षेत्र में बकरी पालन के प्रति समझ विकसित हुई।

जल संरक्षण प्रबन्धन परियोजना
Water Coservation Planing Programme

पृष्ठभूमि

द् हंस फाउण्डेशन, नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर द्वारा अजमेर जिले की श्रीनगर पंचायत समिति की नरवर ग्राम पंचायत के दो गाँवों निम्बुकिया और टिढ़ाणा मे जल संरक्षण प्रबन्धन परियोजना का संस्थान पिछले 15 वर्षों से महिला समूह, संयुक्त देयता समूह, किसान क्लब का गठन करके संचालित कर रही हैं। दोनों गाँवों मे पीने के पानी की बहुत ज्यादा समस्या पिछले 6-7 वर्षों से आ रही हैं। यहां के लोग पीने का पानी लगभग 4-5 किलोमीटर दूर से लेकर आते हैं। यहां पर टेंकर का मूल्य भी 350-400 रुपये है और मजदूरी भी दोनों गाँवों मे कम है। यहां के लोग अजमेर मजदूरी करने जाते हैं। इसलिए लोगों की समस्या को देखते हुए संस्थान ने जल संरक्षण प्रंबधन परियोजना द् हंस फाउण्डेशन के वित्तिय सहयोग से शुरू की थी।

परियोजना के उद्देश्य

- गांव के लोगों को पीने का पानी मिलना।
- पानी पर होने वाले खर्च और समय को बचाना
- महिलाओं की सेहत और सुरक्षा को बढ़ावा।
- स्वास्थ्य को बेहतर बनाना।
- समुदाय को बेहतर बनाना।
- पशुपालन को बढ़ावा देना।
- कमेटी द्वारा गाँव की दसरी समस्याओं पर चर्चा और समाधान करना।

परियोजना की गतिविधियां

- सार्वजनिक जगह का चुनाव करके बोरवेल खुदवाना।
- पानी की टंकी का निर्माण करना।
- कमेटी द्वारा देखरेख की जिम्मेदारी लेना।
- सम्पूर्ण कार्य में संस्थान के साथ कमेटी का सहयोग।
- ग्राम में जगह-जगह नलों के पास साफ-सफाई इत्यादि रखना।
- ग्रामवासियों द्वारा पानी का आवश्यकता अनुसार उपयोग करना।

रणनीति

ग्रामीण महिला विकास संस्थान पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी दोनों गावों में जल संरक्षण प्रबंधन परियोजना का संचालन करने के लिए दोनों गांवों में एक एक कमेटी बनाई। इस कमेटी को इस परियोजना का

संचालन करने का सम्पूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई ताकि कमेटी सक्रिय रूप से कार्य करती रहे। दोनों गांव मे संस्थान ने जल संरक्षण प्रबंधन परियोजना सफलतापूर्वक संचालित की गई।

प्रभाव

द् हंस फाउण्डेशन– नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास द्वारा संचालित जल संरक्षण प्रबन्धन परियोजना से दोनों गाँवों में ग्रामवासियों को समय और सरलता से पीने का पानी के साथ पशुओं को भी पीने का पानी गाँव में उपलब्ध हो गया हैं। पानी पर होने वाले खर्च को अब ग्रामवासी स्वस्थ्य और शिक्षा पर खर्च करने लगे हैं। गाँव वालों को निरन्तर समय पर पीने का पानी मिलने लगा जिससे गाँव वाले द् हंस फाउण्डेशन और संस्थान का बहुत आभार व्यक्त करते हैं। इस परियोजना को निरन्तर चलाने की ज़िम्मेदारी लेने को तैयार हैं।

वर्मीकम्पोस्ट के द्वारा जैविक खाद से खेती को बढ़ावा देकर महिलाओं को प्रशिक्षण व कृषि के अपशिष्ट का प्रबन्धन करना

Training of Women & Agriculture Waste Management to Vermi Composting to Encorance Organic Farming

पृष्टभूमि

द् हंस फाउन्डेशन, नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से संस्थान द्वारा भिनाय पंचायत समिति के तीन ग्राम पंचायतों के गाँवों का चयन किया गया, जहाँ का पानी तेलीय व खारा है। देशी खाद की उपलब्धता कम होने के कारण लोग डी.ए.पी., यूरिया का बिना मिट्टी, पानी की जाँच करवाये अधिक उपयोग करते हैं, जिससे फसल उत्पादन व भूमि उत्पादन दिन प्रति दिन कम होता जा रहा है। कृषि की उत्पादन क्षमता बनाये रखने के लिए वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिट लगवाई गई व वर्मी कम्पोस्ट खाद उपयोग करना प्रारम्भ किया है।

उद्देश्य

- किसानों द्वारा उपयोग किया जाने वाला यूरिया, डी.ए.पी. खाद का उपयोग बन्द करवाना।
- किसानों की आय में वृद्धि करवाना।
- कृषि भूमि उत्पादन क्षमता को बढ़ाना।

रणनीति

- इच्छुक महिलाओं का चयन करना।
- महिलाओं को प्रशिक्षण देना।
- उत्पादित खाद को पैंकिग कर बेचना।
- यूरिया, डी.ए.पी. खाद के उपयोग से उत्पादित फसल व वर्मी कम्पोट खाद से उत्पादित फसल में

तुलनात्मक अन्तर को अवगत करवाना।

- यूरिया, डी.ए.पी. खाद का उपयोग करने से लगने वाली लागत व वर्मी कम्पोस्ट खाद की लागत के बारे में किसानों की जानकारी को बढ़ाना।

गतिविधियाँ

1. **प्रशिक्षण:**- वर्मी कम्पोस्ट खाद के बारे मे महिला कृषकों की समझ विकसित करने के लिए परियोजना संचालन के समय में मासिक/त्रैमासिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

2. **वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिट:**- महिलाओं को वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिट लगाने व लगाने से पूर्व तैयारियों के बारे में जानकारी दी गई जिसमें यूनिट में खाद डालने से पूर्व रखी जाने वाली सावधानियों से अवगत करवाया गया व वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिटों की स्थापना की गई।

3. **वर्मी कम्पोस्ट खाद शेड निर्माण कार्य:**- वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिट शेड निर्माण करवाने से पूर्व स्थान का चयन किया गया व यूनिट लगाई गई इसके साथ गोबर खाद से यूनिट को भरवाकर पानी पर्याप्त मात्रा में दिलवाने है। पानी की व्यवस्था करवाई गई तथा देखरेख की लाभार्थी को जिम्मेदारी दी गई।

4. **वर्मी कम्पोस्ट खाद तैयार करना:**- वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिट में भरे गये खाद को पर्याप्त मात्रा में 38-40 दिन पानी देने के बाद 5 दिन तक पानी बन्द करवाया गया व बाद में खाद की छंटाई करवायी गई जिससे किसान अपनी आवश्यकता पूर्ति कर बाकी खाद को बेचना प्रारम्भ कर दिया।

5. **वर्मी कम्पोस्ट खाद पैकिंग:**- किसान अपनी आवश्यकता पूर्ति करने के बाद बचे खाद को थैलियों में पैंकिंग कर लिया गया। इस पैकिंग में 1 किलो व 2 किलो खाद पैकिंग की थैलियां मुख्य रहीं। खाद को नर्सरियों व घरेलू गमलों में 15 से 16 रुपये किलो के भाव से बेचा जा रहा है

उपलब्धियाँ

- किसानों ने यूरिया डी.ए.पी. का प्रयोग करना कम किया।
- किसानों का वर्मी कम्पोस्ट खाद के प्रति रुझान बढ़ा।
- किसानों द्वारा उपयोग किये गये खाद का परिणाम देखने से उनका विश्वास मज़बूत हुआ।
- किसानों की आय व उत्पादन में वृद्धि हुई।
- फसल को यूरिया, डी.ए.पी. खाद देने पर पानी की आवश्यकता अधिक पड़ती थी मगर वर्मी कम्पोस्ट खाद उपयोग करने पर फसल को एक पानी कम दिया गया जिससे किसानों को डीजल खर्च प्रति बीघा 500 रुपये की बचत हुई।

महिला स्वयं सहायता समूह गठन कार्यक्रम
Woman Self Help Group Formation Programme

पृष्ठभूमिः- ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर जिले की श्रीनगर , सिलोरा, भिनाय व पिसांगन पंचायत समितियो के लगभग 270 गाँवो में महिला स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम विभिन्न संस्थाओ के विताय सहयोग से पिछले 15 वर्षो से महिला स्वयं सहायता समूह का कार्यक्रम संस्थान संचालित कर रही है। संस्थान के पास 895 महिला स्वयं सहायता समूह वर्तमान में गठित करके संचालन कर रही है। नाबार्ड, सर रतन टाटा ट्रस्ट, अरावली व अन्य सरकारी संस्थाओ के द्वारा संस्थान को महिला स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम को संचालन करने में वित्तीय सहयोग के साथ-साथ तकनीकि प्रशिक्षण और मार्गदर्शन दे रहे है। SHG कार्यक्रम में संस्थान ने तीन महिला फेडरेशन भी गठन किये है।

क्र.सं.	समूह संख्या	वित्तीय सहयोग
1	550	राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)
2	175	सर रतन टाटा ट्रस्ट व सी. एम. एफ.
3	125	अरावली व सर रतन टाटा ट्रस्ट
4	45	यू.एन.डी.पी. व अरावली
योग	**895**	

संस्थान के पास 895 महिला स्वयं सहायता समूह है और संस्थान के पास 878 महिला स्वयं सहायता समूहो को बैंक से जोडकर बैंक लोन दिलवाया है। मार्च, 2015 तक 27 करोड़ 63 लाख रुपये का बैंक लोन आई.सी.आई.सी.आई., एस.बी.आई., यू.बी.आई., एच.डी.एफ.सी. बैंक से लोन दिलवाया है। महिला स्वयं सहायता समूह गठन व संचालन करने से महिला सशक्तिकरण के साथ-साथ आर्थिक व सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ है।

उद्देश्य

- समूहों का क्षमता वर्द्धन करना ताकि वह अपना विकास कर सके तथा प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर प्रबंधन करते हुए अपनी आजीविका सुनिश्चित कर सकें।
- प्राकृतिक संसाधन से संबंधित गतिविधियों द्वारा महिलाओं की आमदनी का स्तर बढ़ाना जिससे उन्हें व्यक्तिगत एवं सामूहिक संसाधनों तक महिलाओं की पहुंच बढ़ाना।
- महिलाओं की ग्राम पंचायत एवं सरकारी कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ाना।
- परिवार एवं समाज में महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाना।
- महिलाओं के समूहों को संगठित करने का प्रयास करना एवं महिला मंच का गठन करना।
- महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करके उनके बच्चों को भी शिक्षित करने के लिए उन्हें प्रेरित करना।

रणनीति

- गांव का चयन व समान आर्थिक स्तर पर महिलाओं का चयन।
- मासिक बैठकों का आयोजन व बचत के लिए प्रोत्साहन।
- स्वयं सहायता समूह का दस्तावेजीकरण।
- विभिन्न योजनाओं के जुड़ाव हेतु प्रेरित करना।
- क्षमतावर्धन हेतु लघु प्रशिक्षण।
- बैंक जुड़ाव व ऋण उपलब्ध करवाना।

उपलब्धियाँ

- समूह का गठन।
- बैंक जुड़ाव (बचत खाता +SHG लोन उपलब्ध)।
- महिलाओं की समूह के प्रति समझ विकसित करना।
- साहुकार से छुटकारा दिलाना।
- मासिक बचत की आदत विकसित करना।
- आपसी व बैंक लेन-देन में समझ वृद्धि करना।
- आत्मनिर्भरता उत्पन्न करना।
- सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से जुड़ाव।

गतिविधियाँ

समूह गठनः- नाबार्ड के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा 300 समूह का गठन किया जा चुका है। यह समूह श्रीनगर, सिलोरा, भिनाय व पीसांगन पंचायत समिति में गठन किये गये।

समूह सदस्य बचत खाताः- नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से गठित 300 समूह के सदस्यों के बचत खाते खुलवाने थे जिसमें 2100 सदस्यों के व्यक्तिगत बचत खाते क्षेत्रीय बैंको में खुलवाये जा चुके है।

बीमाः- संस्थान द्वारा 300 समूह के सदस्यों का जीवन बीमा भी करवाने के लिए LIC, HDFC और National Insurance Company के साथ मिलकर समूह सदस्यों का जीवन बीमा करवा रही है।

प्रशिक्षणः- संस्थान द्वारा गठित 300 स्वयं सहायता समूहों को नेतृत्व विकास व क्षमतावर्धन को प्रशिक्षण दिया गया है। प्रशिक्षण देकर समूह के सदस्यों की क्षमता वृद्धि हुई है और बैंक लोन, आन्तरिक लोन, अन्य गतिविधियों में सदस्य रूचि लेने लगे है। आगामी समय में इस समूह के पदाधिकारियों को भी प्रशिक्षण दिया जायेगा।

स्वयं सहायता समूह फैडरेशन का संवर्धन एवं लघुवित्त कार्यक्रम का एकीकरण

Promotion of Self Help Group Federation and Consolidation of Micro Finance Programme

पृष्ठभूमि

ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर के द्वारा वर्ष 2011 में एक महिला फैडरेशन का गठन किया था। फेडरेशन का सोसायटी एक्ट में रजिस्ट्रेशन करवाया है। ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फेडरेशन)

दांता में वर्तमान में 200 महिला स्वयं सहायता समूह जुड़े हुए हैं। श्रीनगर व सिलोरा पंचायत समिति के 29 गांवों में यह फैडरेशन महिलाओं के साथ काम कर रहा है। फैडरेशन के लिए संस्था वित्तीय सहायता पिछले तीन वर्षों से कर रही है।

फैडरेशन का लक्ष्य

ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फैडरेशन) दांता का गठन करने का मुख्य उद्देश्य महिलाओं का बेहद बड़ा संगठन के रूप में अपनी समस्याओं का समाधान करना है और आजिविका के लिए नये-नये विकल्पों के साथ कार्य करके महिला सशक्तिकरण किया जाना था।

वित्तीय वर्ष में की गई गतिविधियाँ

समूहों का स्वयं मूल्यांकनः- ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फैडरेशन) के सभी 200 महिला स्वयं सहायता समूह का स्वयं मूल्यांकन किया गया है। फैडरेशन से जुडे समूहों की मंथन कि जो कि सी.एम.एफ के द्वारा तैयार की गई है। तथा समूहो का स्वयं मूल्यांकन करने से समूह सदस्यो को अपने समूह में जो कमजोरियों की पहचान हुई है उसके बाद उनको दूर करने के लिए समूह स्तर पर क्या प्रयास किये जायें और फैडरेशन से क्या मदद ली जाये आदि के बारे में विस्तृत जानकारी इस मूल्यांकन से हुई और आगामी एक वर्ष की कार्ययोजना भी मूल्यांकन के बाद बनाई गई।

समूह ऑडिटः- ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फैडरेशन) से जुड़े 200 समूहों की आडिट की गई समूह ऑडिट क्षैत्रिय समन्वयक और फैडरेशन मेंनेजर के द्वारा की गई समूहो की आडिट करने से समूह की वित्तीय स्थिति का सही प्रकार से पता लगा और मुंशी और स्टाफ कहाँ पर क्या-क्या गलतियां कर रहे है उसके बारे में जाना तथा फैडरेशन के सभी समूह लाभ की स्थिति में है। तथा समूह लाभ को सदस्यो को वितरण नही करे थे। आगामी समय के लिये मुंशी को एक दिवसीय बैठक में समूह रिकॉर्ड के बारे में चर्चा की और समूह रिकॉर्ड किस प्रकार से सही लिखे जाने चाहिए के बारे में भी बताया गया।

बैंक लोनः- ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फैडरेशन) से जुड़े समूहों को बैंक लोन की आवश्यकता पड़ी उन सभी समूहो को ICICI बैंक से लोन दिलवाया गया था। जिस भी समूह को बैंक से लोन मिला वह समूह अपने सदस्यो की आजीविका वर्धण गतिविधियों के लिये लोन का उपयोग करके समूह समय पर बैंक को लोन की वापसी कर रहे हैं। फेडरेशन से जुडे समूहो को पशुपालन व खेती पर ज्यादातर लोन दिलवाया गया है।

फेडरेशन आम सभा का आयोजनः- ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फेडरेशन) दांता के द्वारा 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर फेडरेशन की आम सभा का आयोजन किया गया। जिसमे लगभग 1800-1900 महिलाओ ने भाग लिया। फेडरेशन की आम सभा में सर्व प्रथम फेडरेशन अध्यक्ष ने पिछले एक वर्ष की प्रगति रिर्पोट सभी महिलाओ के सामने प्रस्तुत की और आगामी वित्तीय वर्ष की कार्ययोजना पर भी चर्चा की गई तथा आम सभा में फेडरेशन कार्यकारीणी के बदलाव या नये चुनाव करने पर भी चर्चा की गई ताकि नये सदस्यो को मौका मिले इसके लिये सभी कलस्टरो को सूचित किया कि अपने-अपने कलस्टर से 5-5 लोगों को चयनित करके फेडरेशन को सूची देवे ताकि अगले 3-4 माह में नये चुनाव किये जा सके। फेडरेशन द्वारा टाटा टी

(चाय) बेचने और इस कार्य को दूसरे फेडरेशन तक भी पहुंचाने पर भी चर्चा की गई।

साख दर्पण में डाटा एन्ट्री- ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फेडरेशन) दांता से जुड़े सभी 200 समूह को राजस्थान सरकार व सी.एम.एफ. के द्वारा बनाया गया साख दर्पण ऑन लाइन सॉफ्टवेयर में डाटा एन्ट्री किया जाना है। वित्तीय वर्ष में 183 समूहो की डाटा एन्ट्री आन लाइन कर दी गई है। बाकि समूहो की डाटा एन्ट्री शीघ्र कर दी जायेगी ताकि सभी समूह ऑनलाइन होने से किसी प्रकार की परेशानी समूह, फेडरेशन, संस्थान को नही आयेगी।

अन्य गतिविधियाँ

टाटा टी के साथ जुड़ाव:- ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फेडरेशन) दांता अजमेर ने अपने समूह सदस्यो के लिए टाटा टी प्रोडक्ट खरीद कर बेच रहा है। जिससे फेडरेशन को वित्तिय सहयोग के साथ-साथ लोगो को रोजगार भी मिल रहा है।

मोबाइल हेल्थ केयर यूनिट:- फेडरेशन के 12 गाँवों में द् हंस फाउन्डेशन-नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से स्वास्थ्य प्रशिक्षण नि:शुल्क दवाइयाँ वितरण, नि:शुल्क स्वास्थ्य चेकअप, स्वास्थ्य के प्रति जानकारी इत्यादि पिछले एक वर्ष से समूह सदस्य व उनके परिवार वालों गाँववासियों को नि:शुल्क मिल रही है, जिससे समूह सदस्यों के स्वास्थ्य पर बहुत सुधार हुआ है और स्वास्थ्य पर खर्च होने वाले पैसों की बचत हुई है।

विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं का विजिट:- ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फेडरेशन) दांता के द्वारा संचालित स्वंय सहायता समूह, क्लस्टर का ऐक्सपोजर विजिट करने के लिए विभिन्न संस्थाओं नें भम्रण किया था।

महिला साक्षरता परियोजना
(Women Literacy Programme)

पृष्ठभूमि:- ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी (अजमेर) के द्वारा SRTT के मार्गदर्शन एवं वित्तीय सहयोग से महिला साक्षरता के लिए अजमेर जिले की 2 पंचायत समिति सिलोरा व श्रीनगर समिति के 4 गांवों में 7 महिला पाठशालाएँ संचालित की जा रही है। इन पाठशालाओं का विवरण निम्न प्रकार से है:-

क्र.सं.	पाठशाला का नाम	नामांकन संख्या	गांव का नाम	ग्राम पंचायत	पंचायत समिति
1	सहेली महिला पाठशाला	25	रलावता	रलावता	सिलोरा
2	साथिन महिला पाठशाला	25	रलावता	रलावता	सिलोरा
3	उजाला महिला पाठशाला	25	रलावता	रलावता	सिलोरा
4	शारदा महिला पाठशाला	25	थल	थल	सिलोरा
5	लाडली महिला पाठशाला	25	सिणगारा	थल	सिलोरा
6	गंगा महिला पाठशाला	25	सिणगारा	थल	सिलोरा
7	सखी सहेली महिला पाठशाला	25	सराणा	ऊँटड़ा	श्रीनगर
	योग	**175**			

उद्देश्य:-

1. ग्रामीण क्षेत्र में संचालित महिला स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को दैनिक जीवन में साक्षरता के लेकर आनी कठिनाईयों का सामना करने में सक्षम हो सके।
2. SHG की क्षमता को सुधारने के लिए कार्यात्मक साक्षरता को विकसित करना।
3. SHG की महिलाओं में सशक्तिकरण और आत्मविश्वास पैदा करना।
4. गांवों में होने वाली विकासात्मक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना।
5. प्राथमिक स्तर तक की महिलाओं को साक्षर करना।
6. प्राथमिक दस्तावेजों को मूर्त रूप से पढ़ सके।

रणनीति

- SHG से जुड़ी महिलाओं में साक्षरता के माहौल को प्रभावित करना।
- महिलाओं को पढ़ने-लिखने में आने वाली समस्याओं से अवगत कराना।
- समुदाय (SHG महिला कलस्टर व SHG) के साथ बैठक करना।
- समय, स्थान, और अध्यापिकाओं का चयन करना।

गतिविधियाँ

महिलाओं और अध्यापिकाओं का चयन प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिये यह शर्त रखी गई की महिला अध्यापिका स्थानीय व दशवीं से बारहवीं तक पढ़ी लिखी व ईमानदार, सेवाभावी, समय की पाबन्द और मासिक बैठकों व समय-समय पर आयोजित प्रशिक्षण में भाग लेने वाली हो। उपरोक्त नियमों के अनुसार उन सभी महिलाओं व समुदाय की सर्वसहमति से स्थान व महिलाओं की चयन प्रक्रिया पूर्ण की गई।

परियोजना प्रारम्भ से पूर्व महिलाओं को अक्षर ज्ञान नही था। वहां की महिलाएं अधिकतर दूसरे पढ़े-लिखे लोगों पर ही निर्भर रहती थी और महिलाओं ने यह भी नहीं सोचा की वे कभी अक्षर ज्ञान प्राप्त कर सकेगी। इस परियोजना के माध्यम से पढ़ने वाली सभी महिलाओं को हस्ताक्षर करना एवं अक्षरों को पढ़ना व परिवार के सदस्यों की सूची तैयार करना सीख लिया है। साथ किसी गीत को पढ़कर गाना भी सीख गई है।

वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम
(Financial Litercy Programme)

पृष्ठभूमि- राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान- बूबानी के द्वारा वित्तीय साक्षरता अभियान के तहत पंचायत समिति श्रीनगर, सिलोरा एवं पीसांगन के 50 गावों में वित्तीय साक्षरता अभियान चलाया गया।

उद्देश्य- वित्तीय साक्षरता अभियान का मुख्य उद्देश्य है कि ग्रामीण क्षैत्र में गरीब लोगों को सीधा बैंकों से जोड़कर उन्हें गरीबी के अभिशाप से मुक्त करना। वित्तीय साक्षरता एवं सुलभ उपलब्धता के माध्यम से ही

वित्तीय समावेशन को सुविधाजनक बनाना था। इस कार्यक्रम का प्रायोजन आम आदमी को जानकारी प्रदान करना हैं ताकि वित्तीय सेवायें लोगों की पहुंच मे हो सकें एवं उपलब्ध हो सकें।

शुभारम्भ- वित्तीय साक्षरता अभियान का शुभारभ्म ग्रामीण महिला विकास संस्थान के कार्यालय प्रांगण से 22-03-2014 को हरी झडी दिखा कर किया गया। इस अवसर पर संस्थान की संचार टीम के माध्यम से वित्तीय साक्षरता अभियान के प्रचार प्रसार हेतु संचार टीम द्वारा की गई तैयारी की प्रस्तुति दी गई। समारोह में आस पास गांवों की सैकडों महिलाए उपस्थित हुई। समारोह के बाद वित्तीय साक्षरता अभियान मे जागरूकता रथ को हरी झडी दिखाकर अभियान के कार्यक्षैत्र मे रवाना किया।

गांवों में वित्तीय साक्षरता अभियान- वित्तीय साक्षरता अभियान के तहत पंचायत समिति श्रीनगर, सिलोरा, पीसांगन के 50 गांवों में वित्तीय साक्षरता जागरूकता रथ के माध्यम से प्रचार प्रसार किया एवं संचार टीम के माध्यम से लोगों मे वित्तीय सेवाओं को लेकर जागरूकता लाने के उद्देश्य से नुक्कड नाटक, पपेट शो एवं पम्पलेट वितरण किये गये।

अभियान के अन्तर्गत गांवों मे वित्तीय सेवा जागरूकता को लेकर नारा लेखन, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किये गये। नुक्कड नाटक, पपेट शो के माध्यम से लोगों को ० बैंलेस से नजदीकी बैंक में खाता खुलवाने की जानकारी दी गई। साथ ही माइक्रो पेंशन, किसान क्रडिट कार्ड, बीमा योजना, स्वयं सहायता समूह गठन प्रक्रिया के बारे मे बताया एवं जानकारी के दौरान बचत कैसे एवं कहां करे। इसके बारे मे जानकारी दी जिनमे बताया कि

- गैर जरूरी (फालतू) खर्च ना करें।
- अपना समय उत्पादन कार्यों (कमाने) मे लगाये।
- छोटी छोटी बचत से ही बड़ी बचत होती हैं।
- बचत का पैसा बैंक मे रखें तथा उस पर ब्याज कमायें।
- बचत के पैसे को लागत (धन्धे) मे लगायें और पैसे कमायें।

वित्तीय साक्षरता अभियान के तहत 50 गांवों मे वित्तीय साक्षरता जागरूकता रथ घूम घूम कर नुक्कड नाटक व पपेट शो के माध्यम से निरन्तर जानकारियां दी।

शून्य बैंलेस मे खाता:- अभियान के अन्तर्गत शून्य बैंलेस मे खाता खुलवाने की जानकारी दी गई। परिणामस्वरूप 1250 खाते खुलवाये गये।

वित्तीय सामर्थ्य परियोजना
(Financial Capability Programme)

पृष्ठभूमि:- जी आई जेड के वित्तीय एवं सेन्टर फॉर माइक्रो फाइनेन्स, जयपुर के तकनीकी सहयोग से ग्रामीण

महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित 150 महिला स्वयं सहायता समूह से जुडे हुए 1500 सदस्यों का वित्तीय क्षमता बेसलाइन सर्वे किया जा रहा हैं। यह कार्यक्रम पंचायत समिति श्रीनगर एवं सिलोरा के 13 गाँवों में संचालित किया जा रहा है।

उद्देश्य

वित्तीय सामर्थ्य परियोजना के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं-

- SHG सदस्यों की वित्तीय क्षमता को मंत्रणा,
- सरकारी सामाजिक सुरक्षा सहयोग के साथ लिंकेज,
- बैंक अकाउन्ट के उपयोग के साथ व्यवहार परिर्वतन का अभ्यास करना,
- लघु बीमा को अपनाना,
- ऋण का बुद्धिमता से उपयोग,
- भविष्य योजनायें बनाना,
- परिवारिक बजट को अपनाना,
- पंचायती राज संस्थाओं मे सदस्यों की भागीदारी बढ़ाना
- कौशल मे बदलाव
- सशक्त वित्तीय प्रबन्धन एवं जीवन की आवश्यकता अनुसार योजना मे परिवारिक निर्णय आदि मे वित्तीय समर्थक के रूप मे सदस्यो की सहायता करना।

वित्तीय सामर्थ्य परियोजना के तहत चयनित 13 गाँवों के स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों से संपर्क किया गया एवं गाँवों में संचालित कलस्टरों की मासिक बैठकों में उपस्थित होकर वित्तीय सामथर्य परियोजना की जानकारी दी गयी। प्रत्येक गाव में FCC (परिवार खुशहाल सखी) का चयन कलस्टरो के माध्यम से किया गया।

गतिविधियाँ

आमुखीकरण प्रशिक्षण:- वित्तीय सामर्थ्य परियोजना के तहत 15 FCC (परिवार खुशहाल सखी) का चयन कर आमुखीकरण प्रशिक्षण दिया। प्रशिक्षण के दौरान वित्तीय यामर्थ्य की जानकारी एवं प्रत्येक FCC का वित्तीय क्षमता बैसलाइन सर्वे फॉरमेट समझने के बाद स्वयं से फारमेट भरवाया गया एवं पुन जाँच की गई। फारमेट भरते समय जो गलतियाँ हुई उन्हें पुन नही करने की सीख दी। वित्तीय सामर्थ्य परियोजना मे प्रत्येक को 10 महिला स्वयं सहायता समूहों के प्रत्येक सदस्य का वित्तीय क्षमता बैसलाईन सर्वे करना बताया।

FCC (परिवार खुशहाल सखी) प्रशिक्षण:- वित्तीय सामर्थ्य परियोजना मे चयन किये गये FCC (परिवार खुशहाल सखी) का 3 दिवसीय प्रशिक्षण आयेजित किया गया। जिसमे 13 गावों की 15 FCC (परिवार खुशहाल सखी) ने भाग लिया। सभी FCC (परिवार खुशहाल सखी) ने 3 दिन प्रशिक्षण मे भाग लिया। प्रशिक्षण के द्वितीय दिन तीन-तीन FCC (परिवार खुशहाल सखी) का 3 समूहो मे बटवारा कर वित्तीय बेसलाईन सर्वे का एक फॉरमेट भरने का कार्य दिया। समूह कर FCC (परिवार खुशहाल सखी) गाँव बूबानी,

सराणा एवं रलावता मे जाकर परिवार मे पति एवं पत्नी के साथ संवाद कर वित्तीय बेसलाईन सर्वे तैयार किया। जिसकी तृतीय दिन सभी FCC (परिवार खुशहाल सखी) का फॉरमेट भरते समय गलतियॉ नही करने की सलाह दी। प्रशिक्षण मे GIZ से जयपाल जी व श्वाती जी के मार्गदर्शन मे उपस्थित हुए।

फैडरेशन/संस्था स्टाफ का 2 दिवसीय आमुखीकरण प्रशिक्षण:-ग्रामीण महिला विकास संस्थान कार्यालय किशनगढ मे वित्तीय सामर्थ्य कार्यक्रम के तहत ग्रामीण महिला जाग्रति समिति एवं संस्थान स्टॉफ का 2 दिवसीय आमुखीकरण प्रशिक्षण आयोजित किया। प्रशिक्षण का शुभारम्भ संस्थान सचिव शंकर सिंह रावत व समिति के पदाधिकारीयों ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रशिक्षण मे समिति सदस्यों को वित्तीय सामर्थ्य कार्यक्रम का उद्देश्य बताये गये एवं वित्तीय सामर्थ्य बेसलाइन सर्वे फॉरमेट पर चर्चा हुई। वित्तीय सामर्थ्य को समझने के लिए आर्थिक खेल चार्ट के माध्यम से समझाया गया एवं हमारे 13 आर्थिक लक्ष्यों पर चर्चा की गई।

वित्तीय क्षमता बेसलाइन सर्वे-परियोजना क्षैत्र 13 गाँवों मे FCC (परिवार खुशहाल सखी) के द्वारा परिवार सर्वे किया जा रहा है। मार्च 2015 तक 1044 परिवारों का वित्तीय बेसलाइन सर्वे किया जा चुका हैं।

जोखिम न्यूनीकरण परियोजना
Risk Mitigation Project (RMP)

सेन्टर फॉर माइक्रोफाइनेंस - जयपुर के वित्तीय सहयोग और ग्रामीण महिला विकास संस्थान- बूबानी, अजमेर के द्वारा जोखिम न्यूनीकरण परियोजना वर्ष 2011 से संस्थान संचालित कर रही हैं। परियोजना के अन्तर्गत महिला स्वयं सहायता समूह से जुडे परिवारों का जोखिम कम करना है जो परिवार अधिक जोखिम के कार्य करते है। उनको बीमा से जोडकर जोखिम कम करना। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जुडाव करके आर्थिक सहायता दिलवाना, प्रशिक्षण जागरूकता केम्पों के माध्यम से जागरूक करना हैं। इसके लिए संस्थान ने जीवन बीमा निगम के साथ MOU भी कर रखा है। वर्ष 2014-15 में बीमा से जुडाव और सामाजिक सुरक्षा योजना के साथ जुडाव किया गया हैं।

उद्देश्य- जोखिम न्यूनिकरण परियोजना को संचालित करने का मुख्य उद्देश्य स्वयं सहायता समूह के सदस्यों का जोखिम कम करना और सरकारी योजनाओं से जोडकर उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाना हैं।

गतिविधियां

समूह के साथ बैठक मे चर्चा- जोखिम न्यूनिकरण परियोजना का मुख्य उद्देश्य समूह से जुडे सदस्यों को आर्थिक, सामाजिक स्थिति से सक्षम करना हैं। समूह बैठकों में बीमा समन्वयक के द्वारा परियोजना की जानकारी देना और बीमा क्या है। इसके साथ साथ सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजना के बारे मे जानकारी देना तथा उसके जुडाव की पात्रता तथा जुडने की प्रक्रिया के बारे में बताया इत्यादि समूह बैठकों मे बीमा समन्वयकों के द्वारा सदस्यों को जानकारी देना हैं।

कलस्टर की बैठक- जोखिम न्यूनिकरण परियोजना के बारे मे संस्थान और फडरेशन के द्वारा गठित क्लस्टरों मे परियोजना के बारे मे जानकारी देना तथा परियोजना के लाभ पर चर्चा करना और गांव ग्राम पंचायत के साथ बीमा समन्वयक के द्वारा जानकारी देना तथा क्लस्टर से जुडे समूहों मे जोखिम न्यूनिकरण परियोजना का सही प्रकार से संचालन करने की जिम्मेदारी लेकर क्लस्टर अपने स्तर पर कार्य करते हैं।

फेडरेशन स्तर पर जोखिम न्यूनिकरण परियोजना- संस्थान जोखिम न्यूनिकरण परियोजना का सफल संचालन करने के लिए संचालन करने के लिए संस्थान द्वारा गठित फेडरेशन को इस परियोजना से लाभान्वित होने वाले सदस्य समूह, क्लस्टर तथा फेडरेशन से जुडे हुए है। इसलिए फेडरेशन के माध्यम से लोगों को ऋणों की जानकारी देना तथा जुड़ाव किया जाता है। सरकार के द्वारा चलाई जा रही बीमा और सामाजिक सुरक्षा योजना को सदस्यों तक पहुंचाने के लिए फेडरेशन कार्य करता हैं।

प्रशिक्षण- जोखिम न्यूनिकरण परियोजना का संस्थान अपने समूह सदस्यों तक सही प्रकार से पहुँचाने के लिए विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं के साथ मिलकर प्रशिक्षण देती है। भारतीय जीवन बीमा निगम, केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, स्थानीय पंचायत समिति व नाबार्ड के वित्तीय सहयोग से समूह के सदस्यों को प्रशिक्षित किया जाता है ताकि लाभान्वित सदस्य निरन्तर योजनाओं का लाभ ले सकें।

संस्थान एक वर्ष मे 15 गाँवों मे बीमा और सामाजिक सुरक्षा योजना के लिए प्रशिक्षण दिया हैं। प्रशिक्षण प्राप्त सदस्य जोखिम न्यूनिकरण दिया हैं। प्रशिक्षण प्राप्त सदस्य जोखिम न्यूनिकरण परियोजना का सही प्रकार से लाभ उठा रहे।

परियोजना का प्रभाव

ग्रामीण महिला विकास संस्थान- बूबानी, अजमेर ने पिछले पाँच वर्षों से इस परियोजना का संचालन कर रही है। विशेषतौर से जो समूह सदस्य शरूआत से इस परियोजना से जुडे हुए है। उनको अपने जीवन स्तर मे आये बदलाव को नये समूह सदस्यों के साथ बाँटते है जिससे नये समूह सदस्य भी परियोजना से जुडकर लाभान्वित होते है। संस्थान निरन्तर उनके साथ चर्चा करके उनके सामने आने वाली समस्याओं का समाधान बीमा समन्वयक, फेडरेशन मैनेजर व संस्थान सचिव निरन्तर प्रयास करजे रहते हैं।

परियोजना की उपलब्धियाँ

- समुदाय को बीमा की जरूरत समझ में आने लगी हैं।
- सरकारी योजना का वास्तविक सदस्यों तक पहुँचाना।
- महिलाएं बीमा से जुड़ने लगी हैं।
- समूह, क्लस्टर, फेडरेशन व संस्थान का क्षमतावर्धन होना।
- सामाजिक सुरक्षा योजना का सही उपयोग करना।
- फेडरेशन को सशक्त बनाने मे जोखिम न्यूनिकरण परियोजना का महत्वपूर्ण सहयोग।

लक्षित हस्तक्षेप परियोजना (माइग्रेट टी. आई.)
(Targeted Intervention Migrant Programme)

पृष्ठभूमि:- ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा चितौड़गढ़ जिले में पिछले 1 वर्ष (1 मार्च 2014) से लक्षित हस्तक्षेप माईग्रेन्ट परियोजना का संचालन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम राजस्थान स्टेट एड्स कन्ट्रौल सोसायटी, जयपुर (राज.) द्वारा पौषित है। संस्थान इस कार्यक्रम के तहत चित्तौड़गढ़ जिले में बाहर से आये हुए पलायनकर्ता (माईग्रेन्ट) 10000 को चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिये किया जा रहा है। ये माईग्रेन्ट राजस्थान व राजस्थान के बाहर से आये हुए लोग है जो कि बिहार, बंगाल, उड़ीसा, झारखण्ड, पंजाब, कश्मीर, मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के साथ नेपाल देश से भी सम्बन्धित है।

संस्थान द्वारा चित्तौड़गढ़ जिले में निम्न ब्लॉकों में कार्य किया जा रहा है, चित्तौड़गढ़, निम्बाहेड़ा, कपासन, चन्देरिया, सावा आदि में संचालित है। कार्यक्रम के तहत विभिन्न विभिन्न सीमेन्ट फैक्ट्रियाँ व अन्य फैक्ट्रियों, कंस्ट्रक्शन कार्य, लोडिंग व अनलोडिंग कार्य में जुड़े लोग हैं।

उद्देश्य:-

- 10000 माईग्रेन्ट लोगों को रजिस्टर करना।
- माईग्रेन्ट लोगों के साथ one to one Or G.D. के माध्यम से उनके साथ बैठक का आयोजन करना। बैठक का आयोजन फील्ड व डी. आई. सी. में किया जाता है।
- नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर के आयोजन द्वारा सभी को नि:शुल्क जाँच व परामर्श उपलब्ध करवाया जाता है।
- HIV/AIDS जाँच के परामर्श व जाँच मुफ्त में दी जाती है।
- लोगों को विभिन्न गतिविधियों से जोड़ना ताकि संस्थान के माध्यम से केवल उनकों जोड़ा जा सके बल्कि उनको टी.आई. सुविधाएं दी जा सके।
- माईग्रेन्ट के जोखिम को कम करना व सुरक्षित यौन व्यवहार के लिये प्रेरित करना है, ताकि HIV/AIDS के संक्रमण पर रोक लगायी जा सके।
- माईग्रेन्ट लोगों को कण्डोम के उपयोग की महत्ता को समझाने व जागरूक रखने में मदद करना।

रणनीति:-

- जोखिम महिला व पुरूष माईग्रेन्ट व्यक्तियों को संस्थान द्वारा रजिस्ट्रेशन करना।
- नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर में अधिक से अधिक लोगों की उपस्थिति।
- HIV / AIDS / RTI, STI संक्रमण को आगे बढ़ने नहीं देगा।
- कण्डोम उपयोग व सुरक्षित व्यवहार के प्रति अग्रसर करना।
- प्रत्येक माईग्रेन्ट को HIV / AIDS / RTI STI व VDRL की जाँच करवाना साथ ही उनको बताना की HIV / AIDS / RTI STI संक्रमण से कैसे बच सकते है।
- नुक्कड़ नाटक के माध्यम से माईग्रेन्ट को सुरक्षित यौन व्यवहार के प्रति जागरूक करने में सहयोग करना।

गतिविधियाँ

संस्थान द्वारा टारगेट इन्टरवेन्शन प्रोग्राम के तहत कई गतिविधियों का आयोजन किया गया जो निम्न है:-

1. **रजिस्ट्रेशन:**- माईग्रेन्ट रजिस्ट्रेशन तीन माध्यमों द्वारा किया जाता है। परामर्शकर्ता द्वारा परामर्श व नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर व डी.आई.सी. में मिटिंग के माध्यम से किया जाता है। रजिस्ट्रेशन पी.एल. व पी.ई. करते है। वर्तमान में 10,842 लोगो का रजिस्ट्रेशन किया गया व उनको टी.आई. सुविधा प्रदान की गई।

2. **परामर्श:**- संस्थान की परामर्शकर्ता द्वारा परामर्श HRG माईग्रेन्ट व अन्य लोगों का किया जाता है। परामर्शकर्ता द्वारा माईग्रेन्ट के जोखिम व्यवहार की जानकारी ली जाती है तथा लोगों को HIV/AIDS Or T.B. जैसे संक्रमणों के बारे में बताया जाता है। लोगों को सुरक्षित यौन व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया जाता है। परामर्श व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों तरह से किया जा सकता है। जोखिम व्यवहार के लोगों को संस्थान द्वारा जोड़कर उनके व्यवहार को परिवर्तित करने के लिये प्रेरित किया जाता है।

3. **रेफरल व लिंकेज:**- संस्थान द्वारा 2000 माईग्रेन्ट HRG को ICTC रेफरल किया जिसमें से 1963 लोगों को HIV/AIDS की जाँच करवायी गयी। T.I के माध्यम से लोगों DIC तक पहुंच बनाने के साथ ही ICTC / ART / TIS /DOT आदि की सुविधा की जानकारी उपलब्ध करवायी जाती है।

4. **नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर:**- गत वर्ष 54 नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से लगभग 4500 हजार को नि:शुल्क जाँच व परामर्श जिसमें लगभग 1963 की HIV जाँच व 650 यौन रोगियों का इलाज किया गया। साथ ही 30 HIV/AIDS शिविरों का आयोजन कर लोगों को जागरूक कर सेवाएं दी गयी।

5. **नुक्कड़ नाटक:**- संस्थान द्वारा माईग्रेन्ट लोगों के लिये विभिन्न क्षेत्रों में 24 नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया। ये आयोजन चितौड़गढ़ जिले के विभिन्न माईग्रेन्ट क्षेत्रों मे किये गये। इस नुक्कड़ नाटकों के आयोजन द्वारा लोगों को HIV/AIDS से बचने व फैलने के कारणों पर हुआ। साथ ही सभी को कण्डोम उपयोग व सुरक्षित यौन व्यवहार के लिये प्रेरित करने का सन्देश क्षैत्र में पहुँचाया। नुक्कड़ नाटक में कलाकारों द्वारा सभी को ICTC/ART/TIS/DOT से बचाव ही उपचार है के बारे में बताया गया।

6. **डेटा मूल्यांकन:**- स्टाफ के सभी सदस्यों द्वारा Counsellor / PM / PL माईग्रेन्ट सम्बन्धित डेटा को एकत्रित करवा कर सभी को M&E व प्रोग्राम ऑफिसर द्वारा जाँच किया जाता है।

7. **व्यवहार परिवर्तन:**- सभी लोगों को जिनका व्यवहार जोखिम है, उनकों बैठक, परामर्श व जाँच के द्वारा व्यवहार परिवर्तन कर सुरक्षित यौन व्यवहार को अपनाने व जीवन में उपयोग करने के लिये प्रेरित किया ताकि माईग्रेन्ट अपने यौन साथी व परिवार के साथ सुरक्षित जीवन यापन कर सके।

8. **कार्यक्रम:**- बैठक आयोजन, परामर्श व जाँच के अलावा सभी कुछ जैसे डिमाण्ड जनरेट गतिविधियाँ, कान्गीगरेशन इवेन्टस का आयोजन समय-समय पर किया गया। साथ ही चितौड़गढ़ एम.एल.ए. (श्रीमान् चन्द्रभान सिंह जी आक्या) व प्रधान (श्रीमान् प्रवीण सिंह जी) कॉलेज अध्यक्ष प्रकाश लिटिल भट्ट द्वारा 1 दिसम्बर 2014 को HIV/AIDS दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, ये आयोजन

कलेक्ट्री चौराहा चितौड़गढ़ में किया गया। जिसमें श्रीमान् चन्द्रभान सिंह जी मुख्य अतिथि रहे। इस कार्यक्रम में उन्होंने अपने विचार व्यक्त कर चितौड़गढ़ को HIV/AIDS मुक्त रखने को कहा। साथ ही प्रधान साहब द्वारा भी सुरक्षित चितौड़गढ़ रखने के लिये आगामी कार्ययोजना बनाने के लिये चर्चा की। कार्यक्रम का समापन कलेक्ट्री चौराहे पर मोमबत्ती जलाकर किया।

उपलब्धियाँ:-

- कार्यक्रम समन्वयक द्वारा चितौड़गढ़ जिले में चिकित्सकीय, सरकारी, गैर सरकारी, CSR/HR फैक्ट्री यूनियन नेता द्वारा नेटवर्क बनाना व उनके साथ एडवोकेसी मीटींग करना आदि से लोगों के प्रति HIV/AIDS के प्रति जागरूकता के लिये प्रयास किये।
- माईग्रेन्ट को सुरक्षित व्यवहार के लिये प्रेरित करना। माईग्रेन्ट में HIV/AIDS के प्रति समझ व जागरूकता बढ़ी। माईग्रेन्ट में HIV/AIDS के प्रति जाँच करवाने पर भय व झिझक में कमी।
- स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से RTI/STI में नियन्त्रण करने के लिये परामर्श व जाँच करने की सुविधा।
- माईग्रेन्ट को कार्यक्रम के साथ-साथ अन्य उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी प्रदान की।
- महिला माईग्रेन्ट से संस्थान से विशेष जुड़ाव व उनके अधिकार व सम्मान की जानकारी दी।

सरकार व गैर सरकारी संस्थाओं का एक्सपोजर विजिट
Governmnet and Non Governmnet Santhan Exposure Visit

विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं का विजिट:- ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फेडरेशन) दांता के द्वारा संचालित स्वय सहायता समूह, क्लस्टर का ऐक्सपोजर विजिट करने के लिए विभिन्न संस्थाओं नें भम्रण किया था।

राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान-जयपुर के द्वारा बैंकर्स व स्वयं सेवी संस्था के स्टाफ को लघुवित्त पर प्रशिक्षण देने के बाद एक दिवसीय एक्सपोजर ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर और ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फेडरेशन) दांता के द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह, क्लस्टर का किया जाता है। जिससे नई नई जानकारियॉ सिखने सिखाने का अवसर मिलता है। एक वर्ष में लगभग 250 लोगो ने विजिट किया है।

ग्राविस संस्थान-जैसलमेर के द्वारा महिला स्वयं सहायता समूह गठन किये उनको ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर और ग्रामीण महिला जाग्रति समिति (फेडरेशन) दांता के द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह, क्लस्टर का एक्सपोजर किया जाता है, और संस्थान प्रशिक्षण देकर नये समूहो को संचालन करने और संगठन से जुडकर स्वय का सगठन बनाकर लम्बे समय तक कार्य करके आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक रूप से सक्षम हो सके उस पर पर प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने अपने क्षैत्र में जा कर कार्य कर रहे है।

वर्ल्ड विजन- संस्थान द्वारा महिला स्वयं सहायता समूह गठन किये गये है जिन्होनें ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर और ग्रामीण महिला जाग्रति समिति(फेडरेशन)दांता के द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह व क्लस्टर का एक्सपोजर किया, और संस्थान से नये समूहो को संचालन करने और संगठन से जुडकर

स्वय का सगठन बनाकर लम्बे समय तक कार्य करके आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक रूप से सक्षम हो सके उस पर प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने अपने क्षेत्र में जा कर कार्य कर रहे है।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान व फेडरेशन के समूहो का वर्ष 2014-015 में सभी संस्थाओ से लगभग 650 महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओ व अधिकारियों नें विजिट किया है। फेडरेशन का विजिट करने के लिए सर्विस चार्ज से भी आय हुई है।

केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड जयपुर श्रम मंत्रालय (भारत सरकार)

पृष्ठभूमि:- केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड जयपुर के वित्तिय सहयोग से और ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर के द्वारा अजमेर जिले की सिलोरा पंचायत समिति में श्रमिको, बेरोजगारों व महिला स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को अधिकार और कानूनों के साथ-साथ रोजगार पर प्रशिक्षण दिया गया है।

40 महिला श्रमिकों का कानून और अधिकार पर प्रशिक्षण:- ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी, अजमेर के द्वारा किशनगढ में 40 महिला श्रमिकों को चार दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया है। प्रशिक्षण में महिलाओं को उनके अधिकार और कानून पर प्रशिक्षको ने प्रशिक्षण देकर उनके कानून और अधिकार को जाना है। सामाजिक सुरक्षा योजना के बारें में जानकारी देकर जुड़ाव करने का माध्यम भी उपलब्ध कराया गया है।

एच.डी.एफ.सी. बैंक द्वारा महिलाओं का प्रशिक्षण:- ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी के द्वारा गठित महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को एच.डी.एफसी. बैंक के द्वारा जिन समूहो को ऋण दिया उन समूह सदस्यों को स्वरोजगार और रोजगार के लिए संस्थान के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया है। मोमबत्ती अगरबती प्रशिक्षण, ब्यूटीपार्लर प्रशिक्षण, वर्मीकम्पोट प्रशिक्षण, सिलाई प्रशिक्षण, डेयरी पर प्रशिक्षण व पापड मंगोडी प्रशिक्षण दिया गया है।

बडोदा स्वरोजगार संस्थान द्वारा महिलाओं को प्रशिक्षण:- ग्रामीण महिला विकास संस्थान-बूबानी के द्वारा गठित महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को बडौदा स्वरोजगार संस्थान के वित्तिय के द्वारा समूह सदस्यों को स्वरोजगार और रोजगार के लिए डेयरी पर संस्थान के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया है।

संस्थान की उपलब्धियाँ:-

- संस्थान को राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पुरस्कार से सम्मानित।
- महिलाओं के संगठन गठित किये गये।
- उन्नत तकनीकि से कृषि और पशुपालन।
- बेरोजगारों को रोजगार से जुड़ाव।
- महिलाओं को शिक्षित करना।
- ग्रामीणो को नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाएं देना।
- ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय समावेश और वित्तिय सामर्थ से जुड़ाव किया।
- लघुवित्त के क्षेत्र में अलग से पहचान बनाना।

संस्थान की भावी सोच:-

- ❖ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना।
- ❖ ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाऐं निरन्तर देना।
- ❖ स्वरोजगार को बढ़ावा देना।
- ❖ पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका सुनिश्चित करना।
- ❖ जैविक और कार्बनिक खेती को बढ़ावा देना।
- ❖ ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय सेवाएं उपलब्ध करवाना।
- ❖ गरीबों को बकरी पालन के द्वारा आजिविका के साधन उपलब्ध करवाना।
- ❖ महिला साक्षरता कार्यक्रम को बढ़ावा देना।

सहयोगी संस्थाएं

1. द् हंस फाउण्डेशन, नई दिल्ली
2. रूरल इण्डिया सपोर्टिंग ट्रस्ट, अमेरिका
3. नाबार्ड जयपुर
4. श्रम मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
5. सेन्टर फॉर माइक्रोफाईनेन्स, जयपुर
6. केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, जयपुर
7. सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई
8. भारतीय जीवन बीमा निगम, अजमेर
9. GIZ, जर्मनी
10. आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, जयपुर
11. अरावली, जयपुर
12. राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, जयपुर केन्द्र
13. जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई
14. द् गोट ट्रस्ट, लखनऊ
15. इब्तिदा, अलवर
16. टाटा ए.आई.ए. सी.एस.आर.
17. राजस्थान स्टेट एड्स कन्ट्रोल सोसायटी, जयपुर (राज.)

GMVS

List of Award to GMVS, Ajmer till now

S. No.	Recognition and awards received till date	Source	Year	Relevant activity / work for which received
1	National Excellence Award	ALMA Foundation	22 Feb. 2015	Outstanding contribution for Socio-Economic Development which is organized.
2	Rashtriya Jan Seva Award	Foundation For Accelerated Community Empowerment New Delhi	28 April, 2014	Outstanding Contribution for National Economics and Social Development.
3	Praise Certificatc	Upkhand Kishangarh Area (District-Ajmer)	15 Aug. 2013	For Outstanding work in Education, Health and Natural Resource Management at District level
4	Praise Certificate	ICICI Bank	25 May, 2013	For Great Contribution in Loaning to SHGs..
5	Excellence award for national social activity	Global Achievers Foundation (GAF), New Delhi.	11 April, 2013	For outstanding individual achievement & distinguished services to the nation.
6	Award on 26 Jan., 2013 for Excellence Work	Republic Day-2013, District Administration, Ajmer	26 Jan., 2013	For praiseworthy work in education, health, disaster management, child rights, Women empowerment etc.
7	Mother Teresa Excellence Award	Integrated Council for Bangalore Socio-economic Progress,	25 Nov., 2012	In recognition of praiseworthy service, excellence performance and memorable contribution for the overall progress of the society.
8	Rajiv Gandhi Excellence Award	India International Friendship Society, New Delhi	29 Aug., 2012	For outstanding individual achievement & distinguished services to the nation.
9	First Position, state level SHG Award	NABARD, Regional Office, Jaipur	27 April, 2012	For SHG bank linkage
10	Excellence award for national social activity	Global Achievers Foundation, (GAF) New Delhi.	20 April, 2012	For outstanding individual achievement & distinguished services to the nation
11	Second position, state level SHG award	NABARD, Regional Office, Jaipur	2010-2011	For SHG to bank linkage
12	Forest Development and Safety Award	Forest Department, Ajmer	29 April, 2010	For Excellent work in the area of forest development and wild animal conservation.
13	Youth Award	Nehru Youth Center, Ajmer (Raj.)	12 Jan 1997	Youth Award on National Youth Day at District Level.

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN (GMVS)
BUBANI-KISHANGARH
AJMER (RAJ.)

Organisational Structure

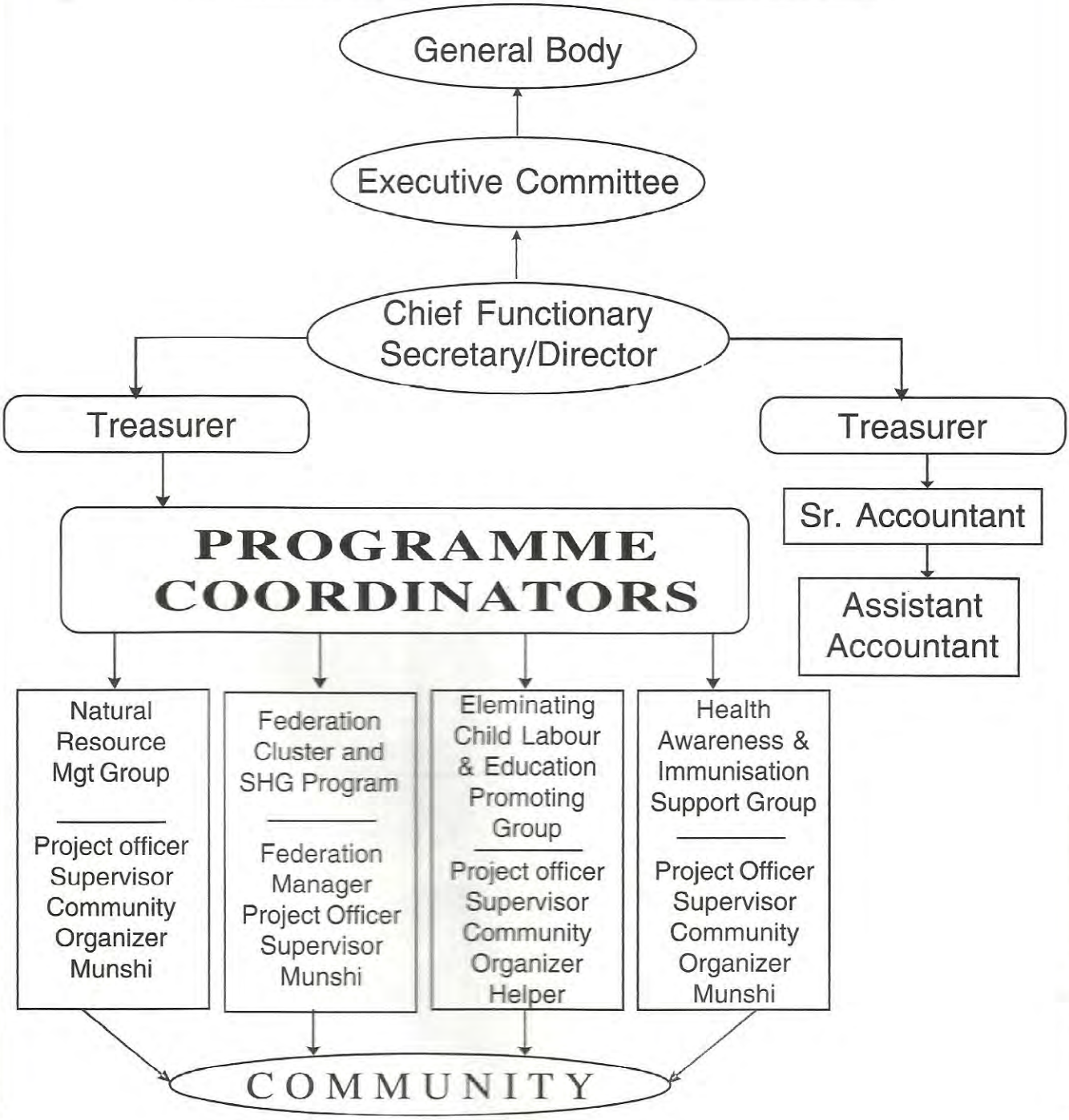

GMVS

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN

ABRIDGED INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2015

EXPENDITURE	AMOUNT `	INCOME	AMOUNT `
To Project Exp.	25,942,863	By Programme Balance b/d	295,273
To Other Exp.	595,552	By Grant Received	26,469,891
To Excess of Income over Expenditure(Including Pending Utilisation)	625,971	By Grant Receivable	235,102
		By Interest from Bank	134,936
		By Other Income	4,500
		By Public Contribution	24,684
	27,164,386		**27,164,386**

In terms of our Audit Report even date attached.

For **DSS & ASSOCIATES**
Chartered Accountants

(S.S. Verma)
Partner
Membership No. : 076981
FRN : 015683 C
Place: Jaipur
Dated:24.06.2015

For **GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN**

Secretary

SECRETARY
Gramin Mahila Vikas Sansthan
Bubani (Kishangarh)
Distt. Ajmer (Raj.) 305801

&

ABRIDGED BALANCE SHEET AS ON 31ST MARCH 2015

LIABILITIES	AMOUNT `	ASSETS	AMOUNT `
General Fund	790,465	Fixed Assets	702,528
Unsecured Loan	410,000	Grant Receivable	1,176,132
Current Liabilities	371,801	TDS Receivable	238,979
Excess of Income over Expenditure(Including Pending Utilisation)	625,971	Loan & Advances	1,160
		Cash in Hand	39,119
		Cash at Bank	40,319
	2,198,237		**2,198,237**

In terms of our Audit Report even date attached.

For **DSS & ASSOCIATES**
Chartered Accountants

(S.S. Verma)
Partner
Membership No. : 076981
FRN : 015683 C
Place: Jaipur
Dated:24.06.2015

For **GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN**

Secretary

SECRETARY
Gramin Mahila Vikas Sansthan
Bubani (Kishangarh)
Distt. Ajmer (Raj.) 305801

प्रगति की ओर बढ़ते कदम

सेवा की ओर बढ़ते कदम ...

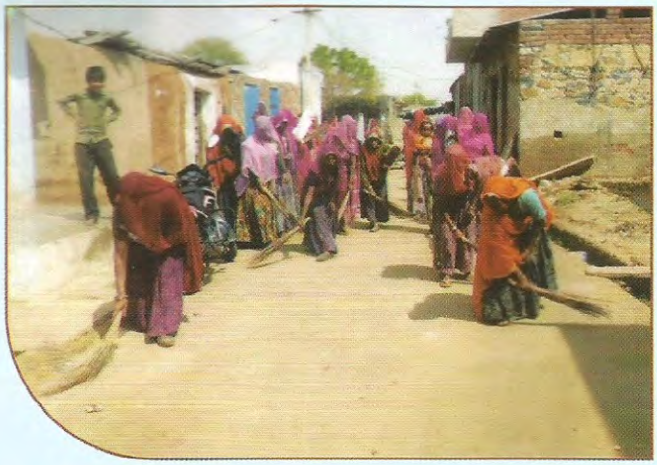

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

मुख्य कार्यालय

पटाखा फैक्ट्री के पास, राजा रेडी (सुमेर नगर)
मदनगंज–किशनगढ़ – 305 801
ज़िला–अजमेर (राजस्थान) भारत
फ़ोन : +91–1463–245642
मोबाईल – +91–9672979032
ई–मेल– bubanigmvs@gmail.com
Visit us : www.gmvs.ngo

पंजीयन कार्यालय

मु. पो. बूबानी
वाया–गगवाना – 305 023
ज़िला–अजमेर (राजस्थान) भारत
मोबाईल – +91–9928170035
ई–मेल– gmvsajmer@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

ई–6 पंचवटी
सामुदायिक केन्द्र के पास
चित्तौड़गढ़ – 312001
(राजस्थान) भारत
मोबाईल – +91–9672979107
ई–मेल– gmvschittorgarh@gmail.com

मुद्रक : प्रगति प्रिन्टर्स, अजमेर. मोबाइल : 9887072959